।। अन्तरचक्राध्यायः ।।

यह अध्याय भी शकुन प्रसंग से ही सम्बन्धित है। पीछे 32 विभागों वाला दिक्चक्र बताया गया है। उन सब विभागों से सम्बन्धित शकुनों का क्रमशः फल बताया जा रहा है। सभी शकुनों में सबसे पहले शुभ या अशुभ का निर्णय करें। यदि दोनों प्रकार के लक्षण मिश्रित हों तो उसे मिश्र शकुन समझकर फल निश्चय करें।

शुभ बलवान् शकुन का फल अधिक शुभ। मध्यम बली शुभ का मध्यम शुभ तथा सामान्य बली शुभ शकुन का फल साधारण शुभ होगा।

इसके विपरीत अशुभ शकुनों में भी बली अशुभ का बहुत अशुभ। मध्यम का मध्यम व साधारण बली का साधारण अशुभ फल समझा जाएगा।

शान्ता दिशाओं का दिक्चक्रानुसार फल :

ऐद्र्यां दिशि शान्तायां विरुवन्नृपसंश्रितागमं वक्ति।
शकुनः पूजालाभं मणिरत्नद्रव्यसम्प्राप्तिम्।। 1।।

पूर्व दिशा (जब शान्त हो) में हुए शकुन से यदि किसी का आगमन सूचित होता हो तो किसी राजपुरुष का आगमन होता है। शकुन के बलानुसार उस व्यक्ति से सत्कार, सम्मान, भेंट व धन आदि प्राप्त होता है। पूर्व दिशा से प्रदक्षिण क्रमानुसार 1. 2. 3..... भाग संख्या मान कर आगे फल बताया जा रहा है।

तदनन्तरदिशि कनकागमो भवेद्वाञ्छितार्थसिद्धिश्च।
आयुधधनपूगफलागमस्तृतीये भवेद् भागे।। 2।।

दूसरे भाग के शकुन से सुवर्ण प्राप्ति व धनागम होता है। साथ ही अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

Scanned with CamScanner

तीसरे भाग के शकुन से शस्त्र की प्राप्ति, धन लाभ व सुपारी आदि कठोर फलों की प्राप्ति होती है।

स्निग्धद्विजस्य सन्दर्शनं चतुर्थे तथाहिताग्नेश्च।
कोणेऽनुजीविभिक्षुप्रदर्शनं कनकलोहाप्तिः।। 3।।

चौथे भाग के शकुन से स्नेह रखने वाले ब्राह्मण का दर्शन अथवा यज्ञकर्ता ब्राह्मण दर्शन होता है।

पाँचवें अग्निकोण भाग के शकुन से भिक्षु (सन्यासी, यति आदि) या उनके अनुयायियों का दर्शन होता है। अथवा सोने वा लोहे की प्राप्ति होती है।

याम्नेनाद्ये नृपपुत्रदर्शनं सिद्धिरभिमतस्याप्तिः।
परतः स्त्रीधर्माप्तिः सर्षपयवलब्धिरप्युक्ता।। 4।।

अग्निकोण से अगले छठे भाग में अर्थात् दक्षिण दिशा के पहले खण्ड में (अग्नि कोण से आगे) राजकुमार से मुलाकात व कामों में सफलता होती है। अभीष्ट लाभ भी होता है।

दक्षिण दिशा के दूसरे भाग में स्त्री लाभ, धर्म लाभ, सरसों या जौ की प्राप्ति होती है।

कोणाच्चतुर्थखण्डे लब्धिर्द्रव्यस्य पूर्वनष्टस्य।
यद्वा तद्वा फलमपि यात्रायां प्राप्नुयाद्याता।। 5।।

कोण सहित चौथे खण्ड में अर्थात् पूर्व से शुरू करने पर आठवें खण्ड में खोई वस्तु की प्राप्ति तथा यात्रा में जैसे तैसे अभीष्ट सिद्धि हो जाती है।

यात्रासिद्धिः समदक्षिणेन शिखिमहिषकुक्कुटाप्तिश्च।
याम्याद् द्वितीयभागे चारणसङ्ग शुभं प्रीतिः।। 6।।

ठीक दक्षिण भाग के शकुन से यात्रा की सफलता। मोर, मुर्गा, भैंस आदि की प्राप्ति। दूसरे भाग में चारण, प्रशंसक आदि से मिलन व शुभ प्रसंग उपस्थित होते हैं।

ऊर्ध्वं सिद्धिः कैवर्तसङ्गमो मीनतित्तिराद्याप्तिः।
प्रव्रजितदर्शनं तत्परे च पक्वान्नफललब्धिः।। 7।।

दक्षिण से तीसरे भाग में धीवर, मछुआरे आदि से मिलन, मछली या तीतर आदि पक्षियों की प्राप्ति और अभीष्ट सिद्धि होती है। दक्षिण से चौथे भाग में सन्यासी या व्रतधारी व्यक्ति का दर्शन, पक्वान्न व फलों की प्राप्ति होती है।

Scanned with CamScanner

नैर्ऋत्यां स्त्रीलाभस्तुरगालङ्कारदूतलेखाप्तिः ।
परतोऽस्य चर्मतच्छिल्पिदर्शनं चर्ममयलब्धिः ।। 8 ।।

नैऋत्य कोण में स्त्री लाभ, वाहन लाभ, आभूषण लाभ, सन्देश वाहक या सन्देश की प्राप्ति होती है।

नैऋत्य से अगले भाग में चमड़े की वस्तु की प्राप्ति, चमड़े की चीजों का व्यापारी या कारीगर का आगमन होता है।

वानरभिक्षुश्रवणावलोकनं नैर्ऋतात् तृतीयांशे ।
फलकुसुमदन्तघटितागमश्च कोणाच्चतुर्थांशे ।। 9 ।।

नैऋत्य से तीसरे भाग में बन्दर, सन्यासी, बौद्धभिक्षु का दर्शन। चौथे भाग में फल फूल व हाथी दाँत आदि से बनी चीजों की प्राप्ति होती है।

वारुण्यामर्णवजातरत्नवैदूर्यमणिमयप्राप्तिः ।
परतोऽतः शबरव्याधचौरसङ्गः पिशितलब्धिः ।। 10 ।।

पश्चिम भाग में शकुन हो तो समुद्र से पैदा होने वाली वस्तुओं की प्राप्ति, अर्थात् रत्न लाभ। पश्चिम से अगले भाग में भील, शिकारी, चोर आदि से मिलन होता है और मांस लाभ होता है।

परतोऽपि दर्शनं वातरोगिणां चन्दनागुरुप्राप्तिः ।
आयुधपुस्तकलब्धिस्तद्वृत्तिसमागमश्चोर्ध्वम् ।। 11 ।।

पश्चिम से तीसरे भाग में किसी वायु रोगी व्यक्ति से मुलाकात एवं चन्दन, अगर आदि सुगन्ध पदार्थों का लाभ होता है। इससे अगले भाग में शस्त्र लाभ या ग्रन्थ/पुस्तक की प्राप्ति अथवा शस्त्र या शास्त्र से रोजी कमाने वाले लोगों से संयोग होता है।

वायव्ये फेनकचामरौर्णिकाप्तिः समेति कायस्थः ।
मृन्मयलाभोऽन्यस्मिन् वैतालिकडिण्डिभाण्डानाम् ।। 12 ।।

वायव्य कोण में चँवर या ऊन निर्मित वस्तु की प्राप्ति एवं किसी कायस्थ से मुलाकात होती है।

वायव्य से अगले भाग में शकुन हो तो मिट्टी के बर्तन का लाभ। नग्नाचार्य (नग्न मुनि) से मुलाकात एवं डंडी से बजाए जाने वाले बाजे (ढ़ोल, नगाड़ा आदि) की प्राप्ति होती है।

Scanned with CamScanner

वायव्याच्च तृतीये मित्रेण समागमो धनप्राप्तिः।
वस्त्राभरणलाभः परमित्रसुहृत्समागमश्च ।। 13 ।।

वायव्य से तीसरे भाग में भवन हो तो मित्र से मिलन व धन लाभ होता है। चौथे भाग के भवन से वस्त्र प्राप्ति, आभूषण लाभ व बहुत प्रिय मित्र से मुलाकात होती है।

दधितण्डुलगोधूमा लब्धिरुदग् दर्शनं च विप्रस्य।
अर्थावाप्तिरनन्तरमुपगच्छति सार्थवाहश्च ।। 14 ।।

उत्तर दिशा के भवन से दही, चावल या खीर की प्राप्ति और ब्राह्मण दर्शन होता है। इससे अगले भाग के भवन से धनलाभ व बाहर से भेजी गई वस्तु की प्राप्ति हो जाती है।

वैश्यावटुदाससमागमः परे शुक्लपुष्पफललब्धिः।
अत ऊर्ध्वं चित्रकरस्य दर्शनं चित्रवस्त्राप्तिः ।। 15 ।।

उत्तर से तीसरे भाग में भवन हो तो वैश्या, ब्राह्मण पुत्र, विद्यार्थी, नौकर से मुलाकात और सफेद वस्तु (फल फूल) की प्राप्ति होती है। चौथे भाग में हो तो चित्रकार या रंगकर्मी से मुलाकात व बहुरंगी वस्त्र की प्राप्ति होती है।

ऐशान्यां देवलकीपसद्रूपी धान्यरत्नपशुलब्धिः।
प्राङ् प्रथमे वस्त्राप्तिः समागमश्चापि वन्ध्यस्त्र्या ।। 16 ।।

ईशान कोण के भवन से भोजन खिलाने वाले (कटलर, रसोइया, बैरा आदि) से मिलन और धान्य, रत्न व पशुओं का लाभ होता है। ईशान व पूर्व के मध्यवर्ती पहले भाग के भवन से वस्त्र लाभ व वेश्या मिलन होता है।

रजकेन समायोगो जलजट्याममश्च परतोऽतः।
हस्त्युष्ट्रमहिषसमाजश्चास्माद् धनहस्तिलब्धिश्च ।। 17 ।।

द्वितीय भाग के भवन से धोबी, ड्राईक्लीनर आदि से मिलन, और जल में पैदा होने वाले पदार्थ की प्राप्ति होती है। तृतीय भाग में हाथी पालने वाले लोगों से सम्पर्क व इन्हीं लोगों से धन लाभ होता है।

द्वात्रिंशद्विधवर्तं दिक्चक्रं वास्तुवत्सनेप्युक्तम्।
अन्तर्विभेदैरन्तः फलानि नवधा विकल्प्यानि ।। 18 ।।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार दिक्चक्र, वास्तु चक्र के समान 32 भागों में बाँटा जाता है। अक्ष फल नेमि (अर Spokes) युक्त चक्र काक फल कहा गया है।

नाभि में स्थित फल को नौ प्रकार से विकल्प करके समझना चाहिए।

नाभिस्थे बन्धुसुहृत्समागमस्तुष्टिरुत्तमा भवति।
प्राग्रक्तपट्टवस्त्रागमस्त्वरे नृपतिसंयोगः।। 19।।

दिक्चक्र के मध्य में अवस्थित अर (तीली) में यदि शकुन हो तो मित्रों व बन्धुओं से मिलन होता है। साथ ही उत्तम सन्तोष प्राप्त होता है। पूर्वभाग में स्थित अर में शान्त शकुन हो तो लाल वस्त्र का लाभ होता है। राजा के साथ मिलन होता है।

आग्नेये कौलिकतक्षपारिकर्माश्वसूतसंयोगः।
लब्धिश्च तत्कृतानां द्रव्याणामश्वलब्धिर्वा।। 20।।

अग्निकोण के अर में शकुन हो तो कपड़ा बनाने वाले, लकड़ी के कारीगर, विशेष कार्य कुशल लोग, अथवा गणितज्ञ, घोड़ा, घुड़सवार, सारथि, ड्राइवर आदि से मिलन होता है तथा इनके मिलन से लाभ होता है। अथवा वाहन प्राप्ति (अश्व लब्धि) होती है।

नेमीभागं वुद्ध्वा नाभीभागं च दक्षिणे योऽरः।
धार्मिकजनसंयोगस्तत्र भवेद् धर्मलाभश्च।। 21।।

दक्षिण में अवस्थित अर में शकुन हों तो धर्म वृद्धि व धार्मिक जनों से संयोग होता है।

उस्राक्रीडककापालिकागमो नैर्ऋते समुद्दिष्टः।
वृषभस्य चात्र लब्धिर्माषकुलत्याद्यमशनं च।। 22।।

नैऋत्य कोण के अरों में शकुन हों तो गाय, खिलाड़ी, कापालिक (तपस्वी या जादूगर) का आगमन होता है और कदाचित् वृषभ (या कृषि उपकरण) का लाभ होता है।

इन शकुनों में यदि भोजन सम्बन्धी शकुन हो तो उड़द व कुल्थ आदि की प्राप्ति, और गेहूँ, चना, जौ, कांगनी आदि अन्न का लाभ होता है।

अपरस्यां दिशि योऽरस्तत्रासक्तिः कृषीवलैर्भवति।
सामुद्रद्रव्यसुसारकाचफलमद्यलब्धिश्च।। 23।।

Scanned with CamScanner

पश्चिम दिशा के अरों में शकुन हो तो किसान वर्ग से संयोग होता है। समुद्र के भीतर पैदा होने वाली चीजों का लाभ व उत्तम काँच की सामग्री का लाभ होता है। फल व उत्तम पीने की सामग्री प्राप्त होती है।

भारवहतदाभिक्षुकसन्दर्शनमपि च वायुदिक्संस्थे।
तिलककुसुमस्य लब्धिः सनागपुन्नागकुसुमस्य।। 24।।

वायव्य कोण के अरों में शकुन हों तो बोझा ढोने वाले, लकड़ी आदि के बिस्त्री, कारीगर, भिक्षुक, आदि का दर्शन होता है। तिलक वृक्ष के पुष्पों की प्राप्ति, पुन्नाग व नाग केसर (अथवा उत्तम पुष्पों) की प्राप्ति होती है।

कौबेर्यां दिशि योऽरस्तत्रस्थो वित्तलाभमाख्याति।
भागवतेन समागमनमाचष्टे पीतवस्त्रैश्च।। 25।।

उत्तर दिशा में स्थित अरों में शकुन हों तो धन लाभ, किसी बड़े ईश्वर भक्त से मिलन व पीले वस्त्रों का लाभ होता है।

ऐशाने व्रतयुक्ता वनिता सन्दर्शनं समुपयाति।
लब्धिश्च परिज्ञेया कृष्णायःशस्त्रघण्टानाम्।। 26।।

ईशान कोण के अरों में शकुन हो तो किसी भक्त या व्रत परक स्त्री से मुलाकात, लोहे के शस्त्र या घंटा आदि की प्राप्ति होती है।

।। बत्तीस दिग् विभाग चक्र।।

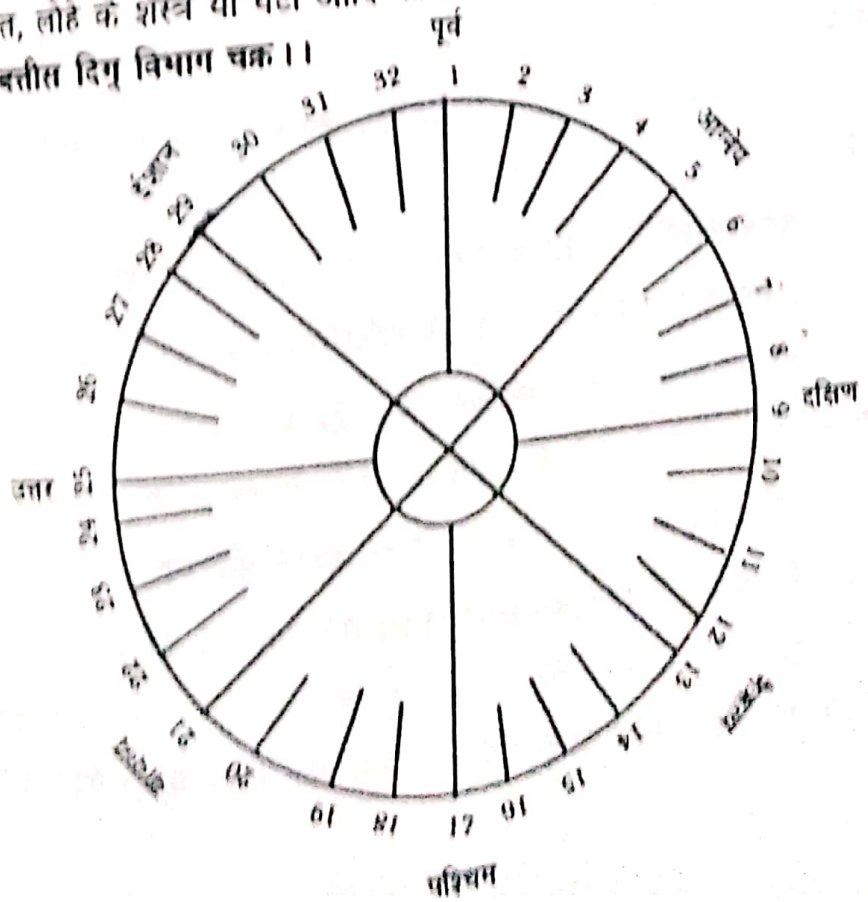

याम्येऽष्टांशे पश्चाद् द्विषट्त्रिसप्ताष्टमेषु मध्यफला।
सौम्येन च द्वितीये शेषेष्वतिशोभना यात्रा।। 27।।
अभ्यन्तरे तु नाभ्यां शुभफलदा भवति षट्सु चारेषु।
वायव्यानैर्ऋतयोररयोः क्लेशावहा यात्रा।। 28।।

दक्षिण दिशा का अष्टमांश (एक भाग का आधा) और नैऋत्य कोण से गिनने पर पश्चिम तक 2. 3. 6. 7. 8 भागों में और उत्तर दिशा के दूसरे अष्टमांश में शान्त शकुन हों तो मध्यम फल वाली यात्रा होती है। शेष सब भागों में शान्त शकुन हों तो उत्तम फलदायिनी यात्रा होती है।

नाभि के भीतर वायव्य व नैऋत्य की रेखा (अरों) में शकुन हो तो क्लेशदायक यात्रा होती है। नाभि के शेष 6 अरों में शकुन हों तो यात्रा शुभ फल देने वाली होती है। यहाँ तक सब फल शान्ता दिशा के सम्बन्ध में कहा है। अब आगे दीप्ता दिशाओं के शकुनों का फल कहा जा रहा है।

दीप्त दिशाओं का फल :

शान्तासु दिक्षु फलमिदमुक्तं दीप्तास्वतोऽभिधास्यामि।
ऐन्द्र्यां भयं नरेन्द्रात् समागमश्चैव शत्रूणाम्।। 29।।

शान्ता दिशाओं का सब फल कहकर, अब आगे दीप्ता दिशाओं का फल कहता हूँ।

दीप्ता पूर्व दिशा में शकुन हो तो राज पक्ष से भय तथा शत्रुओं से समागम होता है।

तदनन्तरदिशि नाशः कनकस्य भयं सुवर्णकाराणाम्।
अर्थक्षयस्तृतीये कलहः शस्त्रप्रकोपश्च।। 30।।

दीप्ता पूर्व दिशा के द्वितीय भाग में शकुन हो तो सोने (धन) का नाश तथा सुनारों को भय। तीसरे भाग में धन हानि, कलह व शस्त्रभय होता है।

अग्निभयं च चतुर्थे भयमाग्नेये च भवति चौरेभ्यः।
कोणादपि द्वितीये धनक्षयो नृपसुतविनाशः।। 31।।

पूर्व दिशा के चौथे भाग में शकुन हो तो अग्निभय। अग्निकोण में चोरों या तस्करों से भय। अग्नि कोण से दूसरे भाग में धन नाश व राजकुमार को भय होता है।

Scanned with CamScanner

प्रमदागर्भविनाशस्तृतीयभागे भवेच्चतुर्थे च।
हैरण्यककारुकयोः प्रध्वंसः शस्त्रकोपश्च।। 32।।

अग्नि कोण से तीसरे भाग में शकुन हों तो गर्भनाश। चौथे भाग में सुवर्ण विक्रेता व हाथ के कारीगरों का विनाश होता है। साथ ही शस्त्रभय भी होता है।

अथ पञ्चमे नृपभयं मारीमृतदर्शनं च वक्तव्यम्।
षष्ठे तु भयं ज्ञेयं गन्धर्वाणां सडोम्बानाम्।। 33।।

पाँचवें भाग (दक्षिण) में शकुन हों तो मारकाट, लाशों का दर्शन। छठे भाग में गायनकर्ताओं व डोमों से भय होता है।

धीवरशाकुनिकानां सप्तमभागाद् भयं भवति दीप्ते।
भोजनविघात उक्तो निर्ग्रन्थभयं च तत्परतः।। 34।।

सातवें भाग में शकुन हों तो धीवर (मांसविक्रेता या मछुआरे) एवं पक्षी विक्रेताओं से भय। अष्टम भाग में शकुन हो तो भोजन की कमी और नग्न साधु से भय होता है। दूसरे भाग के शकुनों से धोबियों व सुगन्ध विक्रेताओं से सम्बन्धित भय होता है।

कलहो नैर्ऋतभागे रक्तस्रावोऽथ शस्त्रकोपश्च।
अपराद्ये चर्मकृतं विनश्यते चर्मकारभयम्।। 35।।

नैऋत्य कोण में शकुन हो तो रक्तपात, शस्त्रकोप व संग्राम होता है। पश्चिम दिशा के पहले भाग में चमड़े की चीजों का विनाश व चर्मकारों से भय होता है।

तदनन्तरे परिव्राट् श्रवणभयं तत्परे त्वनशनभयम्।
वृष्टिभयं वारुण्ये श्वतस्कराणां भयं परतः।। 36।।

पश्चिम के दूसरे भाग में तपस्वी साधुओं से भय या बौद्ध भिक्षुओं से भय होता है। तीसरे भाग के शकुनों से भोजन में कमी होती है। ठीक पश्चिम दिशा में शकुनों से वर्षा का भय तथा उससे अगले भाग के शकुनों से व तस्करों से भय होता है।

वायुग्रस्तविनाशः परे परे शस्त्रपुस्तवार्तानाम्।
कोणे पुस्तकनाशः परे विषस्तेनवायुभयम्।। 37।।

Scanned with CamScanner

पश्चिम से आगे दूसरे भाग के शकुनों से तूफान, आंधी से भय। तीसरे भाग के शकुनों से शस्त्र व पुस्तकों से जीविका चलाने वालों से भय होता है।

चौथे भाग के शकुनों से विषसंक्रमण वायु व चोरों से भय होता है।

परतो वित्तविनाशो मित्रैः सह विग्रहश्च विज्ञेयः।
तस्यासन्नेऽश्ववधो भयमपि च पुरोधसः प्रोक्तम्।। 38।।

वायव्य कोण में धननाश व मित्रों के साथ कलह। दूसरे भाग में घोड़ों का वध व पुरोहितों आचार्यों को भय होता है।

गोहरणशस्त्रघातावुदक् परे सार्थघातधननाशौ।
आसन्ने च श्वभयं व्रात्यद्विजदासगणिकानाम्।। 39।।

उत्तर दिशा की ओर बढ़ने पर पहले भाग के शकुनों से गोहरण व शस्त्रनाश होता है। दूसरे भाग में काफिलों पर आक्रमण व धननाश। तीसरे भाग में कुत्तों से भय, संस्कार भ्रष्ट ब्राह्मण, नौकर, वेश्या से भय होता है।

ऐशानस्यासन्ने चित्राम्बरचित्रकृद्भयं प्रोक्तम्।
ऐशाने त्वग्निभयं दूषणमप्युत्तमस्त्रीणाम्।। 40।।

चौथे भाग में चित्र विचित्र वस्त्रों को भय तथा चित्रकारों या रंगरेजों से भय। ईशान कोण में अग्निभय व उत्तम स्त्रियों की भ्रष्टता होती है।

प्रोक्तस्यैवासन्ने दुःखोत्पत्तिः स्त्रिया विनाशश्च।
भयमूर्ध्वं रजकानां विज्ञेयं काच्छिकानां च।। 41।।

ईशान से अगले भाग के शकुनों से दुःख व स्त्री नाश। दूसरे भाग के शकुनों से धोबियों व सुगन्ध विक्रेताओं से सम्बन्धित भय होता है।

हस्त्यारोहभयं स्याद् द्विरदविनाशश्च मण्डलसमाप्तौ।
अभ्यन्तरे तु दीप्ते पत्नीमरणं ध्रुवं पूर्वे।। 42।।

आखिरी भाग के शकुनों से हाथी सवारों को भय, हाथियों की हानि। भीतर पूर्वीय अर के शकुन से निश्चय से पत्नी का मरण होता है।

शस्त्रानलप्रकोपावाग्नेये वाजिमरणशिल्पिभयम्।
याम्ये धर्मविनाशोऽपरेऽग्न्यवस्कन्दचोक्षवधाः।। 43।।

Scanned with CamScanner

अग्निकोण के अर पर शकुन हो तो शस्त्र व अग्नि का भय, घोड़ों का नाश तथा शिल्पियों से भय होता है।

दक्षिण अर के शकुनों से धर्मनाश। नैऋत्य के अर पर शकुन हों तो अग्निभय, आक्रमण, दुष्टभय होता है।

अपरे तु कर्मिणां भयमथ कोणे चानिले खरोष्ट्रवधः।
अत्रैव मनुष्याणां विसूचिकाविषभयं भवति।। 44।।

पश्चिमी अर के शकुनों से कर्मचारियों से भय। वायव्य अर पर शकुन हों तो गधा, ऊँट आदि पशुओं का वध और मनुष्यों में हैजा आदि पेट के रोगों का भय होता है।

उदगर्थविप्रपीडा दिश्यैशान्यां तु चित्तसन्तापः।
ग्रामीणगोपपीडा च तत्र नाभ्यां तथात्मवधः।। 45।।

उत्तरी अर के शकुन से धननाश व ब्राह्मण पीड़ा। ईशान के अर से मनस्ताप, ग्रामीण जनों को पीड़ा तथा नाभि में दीप्त शकुन हों तो अपनी ही मृत्यु होती है।

इति श्रीमहामतिवराहमिहिराचार्यकृतायां बृहत्संहितायां पं. सुरेशमिश्रकृतेऽभिनव हिन्दीभाष्येऽन्तरचक्राध्यायः षडशीतितमः।। 86।।

Scanned with CamScanner